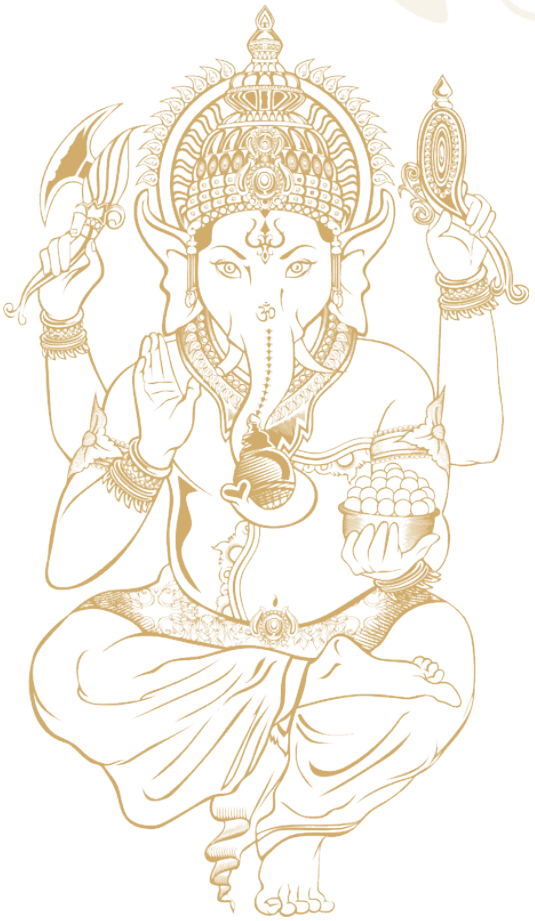

Yash

Megha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119531608

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/07/1998	जन्म तिथि	15/08/1996
मंगलवार	दिन	गुरुवार
घंटे 15:29:00	जन्म समय	15:40:36 घंटे
घटी 24:46:54	जन्म समय(घटी)	24:25:30 घटी
India	देश	India
Alwar	स्थान	Jagdalpur
27:32:00 उत्तर	अक्षांश	19:04:00 उत्तर
76:35:00 पूर्व	रेखांश	82:05:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:40	स्थानिक संस्कार	-00:01:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:34:14	सूर्योदय	05:42:48
19:22:33	सूर्यास्त	18:29:00
23:50:03	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:40

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 7वर्ष 5मा 5दि		29:53:09	तुला	लग्न	धनु	15:42:23	केतु 1वर्ष 1मा 14दि	
शुक्र		21:15:51	मिथु	सूर्य	कर्क	29:02:33	चन्द्र	
11/12/2012		24:10:17	वृश्चि	चंद्र	सिंह	11:11:36	30/09/2023	
11/12/2032		06:52:11	मिथु	मंगल	मिथु	19:54:22	30/09/2033	
शुक्र	12/04/2016	15:48:29	कर्क	बुध	सिंह	25:37:22	चन्द्र	30/07/2024
सूर्य	12/04/2017	04:02:28	मीन	गुरु व	धनु	14:35:03	मंगल	28/02/2025
चन्द्र	12/12/2018	21:30:46	वृष	शुक्र	मिथु	13:23:54	राहु	30/08/2026
मंगल	11/02/2020	08:29:07	मेष	शनि व	मीन	12:57:48	गुरु	30/12/2027
राहु	11/02/2023	08:39:08	सिंह व	राहु व	कन्या	14:55:03	शनि	31/07/2029
गुरु	12/10/2025	08:39:08	कुंभ व	केतु व	मीन	14:55:03	बुध	30/12/2030
शनि	11/12/2028	17:57:11	मक व	हर्ष व	मक	07:58:29	केतु	31/07/2031
बुध	12/10/2031	07:22:31	मक व	नेप व	मक	01:50:22	शुक्र	31/03/2033
केतु	11/12/2032	11:52:15	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	06:31:46	सूर्य	30/09/2033

लग्न-चलित

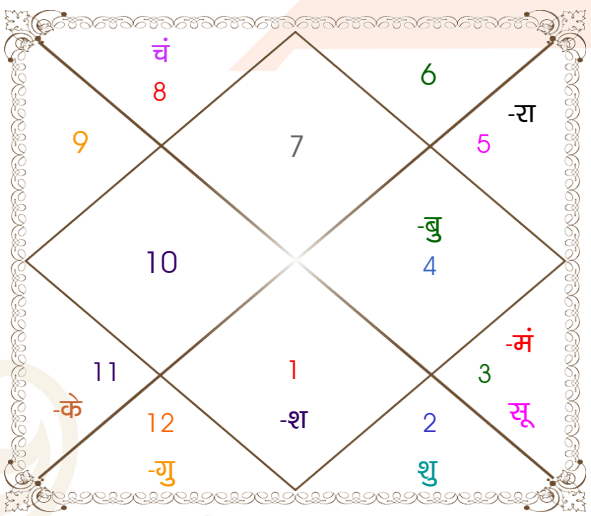

लग्न-चलित

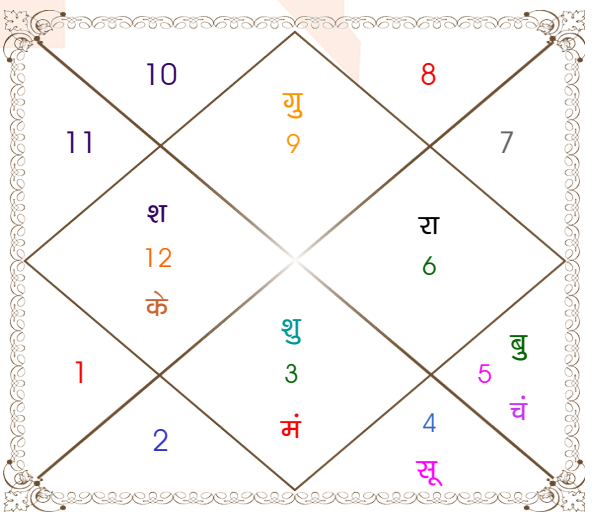

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	32.00		

लैे का वर्ग मृग है तथा डमहीं का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार लैे और डमहीं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

लैे मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

डमहीं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि डमहीं कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि लैे कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु लै कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

लै तथा डमहीं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।